DEPARTMENT OF ECONOMICS
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA (BIHAR)

By :- Dr. Raman kumar Thakur
Assistant Professor (Guest)
Mo. No. :- 9430640318(Whatsapp)
e-mail :- ramankumar_2011@rediffmail.com

B.A. Part - II(Hons); Paper - III
Date :- 30.04.2020

हैरड तथा डोमर के मॉडल"

(The Harrod -Domar Models)

हैरॉड- डोमर का आर्थिक विकास मॉडल उन्नत देशों के अनुभवों पर आधारित है । यह मॉडल प्रमुख रूप से उन्नत पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के लिए है। यह ऐसी अर्थव्यवस्था से संबंधित है । जिसमें सतत् वृद्धि की आवश्यकताओं का विश्लेषण किया जाता है।

हैरॅड तथा डोमर दोनों ही अर्थव्यवस्था के सपाट (Smooth) तथा निर्धारित कार्यक्रम के लिए आवश्यक आय वृद्धि की दर खोजने में दिलचस्पी रखते थे। यद्यपि उनके मॉडल सूक्ष्म रुप में विभिनता लिए हुए हैं, फिर भी वे एक ही प्रकार के निष्कर्ष पर पहुंचते हैं । हैरॅड- डोमर आर्थिक वृद्धि के प्रक्रिया में निवेश को प्रमुख मानते हैं साथ ही वह निवेश के द्वैत(Dual) प्रवृत्ति पर बल देते हैं। उनकी विकास प्रक्रिया में भी नियोजन को अत्यंत महत्वपूर्ण समझा गया है । उनके विचार में विनियोजन एक और आय के वृद्धि में सहायक होता है । वहीं दूसरी ओर उत्पादन में वृद्धि की क्षमता भी रखता है । इस प्रकार विनियोजन मांग एवं पूर्ति दोनों पक्षों का मात्रा बढ़ाने का काम करता है । ऐसा होने पर बेरोजगारी आदि समस्या के समाधान का लाभ प्रत्येक राष्ट्र को आसानी से मिलता है । उनका यह स्पष्ट मत था कि दीर्घकाल में पूर्ण रोजगार लाने के लिए विनियोजन के मात्रा में सतत वृद्धि आवश्यक है । हेरॅड डोमर दोनों ही मॉडल कैंस के विश्लेषण का विस्तार रूप है । किसी भी राष्ट्र में Dynamic अर्थव्यवस्था के स्वरूप में संतुलन प्राप्त नहीं होता है । विनियोग में वृद्धि होने से उत्पादन क्षमता एवं मांग दोनों में वृद्धि होती है ।

हैरॅड- डोमर का मॉडल निम्न मान्यताओं पर आधारित है जो इस प्रकार से देखा जा सकता है :-

1. आय का एक प्रारंभिक पूर्ण रोजगार संतुलन स्तर होता है |
2. सरकारी हस्तक्षेप का अभाव होता है ।
3. यह मॉडल बंद अर्थव्यवस्था में कार्य करते हैं जिनमें विदेशी व्यापार नहीं होता है ।
4. निवेश तथा उत्पादक क्षमता निर्माण के बीच समायोजन होने में देर नहीं लगती है।

By :- Dr. Raman kumar Thakur
Assistant Professor (Guest)
Mo. No. :- 9430640318(Whatsapp)
e-mail :- ramankumar_2011@rediffmail.com

5. औसत बचत प्रवृत्ति सीमांत बचत प्रवृत्ति के बराबर होती है।
6. सीमांत बचत प्रवृत्ति स्थिर रहती है ।
7. पूजी गुणांक अर्थात पुलिस स्टॉक का अनुपात स्थिर मान लिया जाता है।
8. पूजी वस्तुओं का मूल्य ह्रास नहीं होता क्योंकि उन्हें अनंतजीवी मान लिया जाता है ।
9. बचत तथा निवेश उसी वर्ष की आय से संबंध रखते हैं।
10. सामान्य कीमत स्तर स्थिर रहता है ।अर्थात मौद्रिक आय तथा वास्तविक आय समान होती है ।
11. ब्याज की दरों में परिवर्तन नहीं होते।
12. उत्पादक प्रक्रिया में पूंजी तथा श्रम का अनुपात स्थिर होता है।
13. पूंजी में स्थिर तथा प्रचल दोनों प्रकार की पूंजी सम्मिलित है।
14. विदेशी व्यापार से पृथक।
15. स्थिरता- पूंजी के सीमांत उत्पादकता एवं सीमांत बचत को स्थिर मान लिया गया है।